भारतीय छात्रनेताओं को अमेरिका की आंखोंदेखी जानकारी

कैटलिन फ़ेन्नर्टी

जुलाई के महीने में आत्मविश्वास और ऊर्जा से भरे 20 से 21 बरस के छह भारतीय विश्वविद्यालयी छात्र नई दिल्ली के अमेरिकन सेंटर के एक कॉन्फ्रेंस रूम में बैठे थे। उनके सामने किताबों की जो गड्डी रखी थी उसमें एक वर्ल्ड आल्मनैक, अमेरिकी इतिहास की रूपरेखा और अमेरिकी भूगोल भी शामिल थीं। इन छात्रों के आत्मविश्वास से भरे होने का बहुत ठोस कारण था- इनमें से हर एक को उनके विश्वविद्यालयों ने नेतृत्व के उनके गुणों के कारण नामांकित किया था और अब वे अपने देश का प्रतिनिधित्व करने जा रहे थे।

भारतभर से साठ छात्रों ने अपने नेतृत्व गुणों के बारे में निबंध लिखने के बाद लोकतांत्रिकता पर एक परिचर्चा में भाग लिया था। उनमें से इन छह को अमेरिकी दूतावास ने इस शरद मौसम में दो महीने की अवधि के स्टडी ऑफ़ युनाइटेड स्टेट्स इंस्टीट्यूट्स फ़ॉर स्टूडेंट लीडर्स प्रोग्राम के लिए चुना। इस कार्यक्रम के अंतर्गत भारतीय, बांग्लादेशी और पाकिस्तानी स्नातक छात्रों को गहन शैक्षणिक कार्यक्रमों में डाला जाता है ताकि वे अमेरिका को गहराई से समझने के साथ ही अपने नेतृत्व कौशल का विकास कर पाएं।

लेकिन तमाम आत्मविश्वास के बावजूद हमारे भारतीय उम्मीदवार कुछ घबराए, कुछ रोमांच से भरे भी थे क्योंकि उनमें से कोई भी पहले अमेरिका नहीं गया था। और पांच का तो पासपोर्ट ही पहली बार बना था।

लम्बे, काले केशों वाली दिल्ली विश्वविद्यालय की छात्रा समृद्धि शुक्ला नियमित रूप से केएफसी जाने और हंट्सविल में यूनिवर्सिटी ऑफ़ अलाबामा में नए अमेरिकी दोस्तों से मिलने के बारे में सोचकर बहुत खुश थीं। जामिया मिल्लिया इस्लामिया की ईशा अलीम गुलाबी सलवार-कमीज़ पहने और गुलाबी ओढ़नी से सिर ढके उत्साह से इसी कार्यक्रम के अंतर्गत 2004 में मेरीलैंड के वाशिंगटन कॉलेज में अपनी बड़ी बहन हीबा के अनुभवों के बारे में बता रही थीं। अपने अनुभव और विचार बताने के लिए खुद हीबा भी मौजूद थीं। लखनऊ विश्वविद्यालय के शांत लेकिन आत्मविश्वास से भरे राघव भट्ट कह रहे थे कि वह दुनिया के दूसरे छोर पर जाने के विचार से अभिभूत हैं। हरी-भूरी आंखों वाली, खुशमिजाज़ शुभदा चौधरी अपनी मेजबानी करने वाले परिवार से मिलने को उत्सुक थीं।

एक बात पर सभी सहमत थे- वे सभी अपने देश और संस्कृति के अच्छे दूत साबित होना चाहते थे। अलीम के लिए इसका मतलब है, ''भारत की सच्ची तस्वीर दिखाना।'' राघव भट्ट कहते हैं कि बहुत से अमेरिकियों की ही तरह भारतीय भी खुद को एक बड़े से सलाद के कटोरे की तरह देखते हैं- अनेक विभिन्न संस्कृतियों और जातियों का समरस मिश्रण। तो हिन्दू और मुस्लिम, कश्मीरी और दिल्ली वाले, सभी छात्रनेता अमेरिकियों को भारत की समृद्ध संस्कृति, परम्पराओं, मूल्यों और धर्मों के बारे में बताना चाहते हैं। वे मानते हैं कि यह काम आसान तो नहीं है, लेकिन बहुत महत्वपूर्ण है।

अलीम कहती हैं, ''जब लोग एक-दूसरे के बारे में जानकारी नहीं रखते और चीज़ों को एकायामी ढंग से देखते हैं तो दृष्टि धुधंलाती है और इस बात की संभावना बढ़ती है कि दोनों पक्ष पूर्वाग्रहों से भरे हों।'' रिज़वान जावेद शेख मानते हैं कि उनके तीन फर्ज़ हैं: अपने राज्य जम्मू और कश्मीर, अपने देश भारत और अपने धर्म इस्लाम का प्रतिनिधित्व करना। इकबाल भी उनसे सहमत हैं। एक कश्मीरी और एक मुस्लिम के तौर पर मैं भी बाकी भारतीयों की तरह पक्का भारतीय हूं। मुझे अपने देश से प्यार है।''

छात्रों का यह दल अमेरिकी संस्कृति के बारे में जानने को भी उतना ही व्यग्र है और मानता है कि अमेरिका की यात्रा उनके लिए आंखें खोल देने वाला अनुभव सिद्ध होगी ''यह एक एकदम नया अनुभव होगा,'' इक़बाल कहते हैं। वह समृद्धि शुक्ला और अलीम के साथ अलाबामा यूनिवर्सिटी में पढ़ेंगे। बाकी छात्र उत्तर-पश्चिमी अमेरिका में ग्रीन रिवर कम्यूनिटी कॉलेज में पढ़ेंगे।

पिछले ही बरस ग्रीन रिवर कम्यूनिटी कॉलेज में पढ़ी राशि मेहरा इन छात्रों को बता रही थीं कि अमेरिकी संस्कृति और मूल्यों को गहराई से समझ पाने के लिए कक्षा में, और उसके बाहर के अनुभव बहुत मूल्यवान हैं, ''अमेरिकी जीवन को आकार देने वाले राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक प्रश्नों को अमेरिकी दृष्टिकोण से समझने का एक ज़बर्दस्त अवसर। मुझे लगता है कि इससे मुझे अमेरिकी संस्कृति को समझने और उसका सम्मान करने में बहुत मदद मिली। और मेजबान परिवार के साथ रहना भी अद्भुत था। हममें इतने नज़दीकी बढ़ी कि मेरी मेजबान मां मुझसे मिलने भारत आईं। लोगों के साथ आपके गहरे संबंध बनते हैं।''

वाशिंगटन में पढ़ने वाले छात्र मेजबान परिवारों के साथ रहेंगे जबकि अलाबामा में पढ़ने वाले कॉलेज की डॉर्मिटरी में छात्रों के साथ रहेंगे।

अमेरिकियों के बारे में अमेरिका जा रहे इन छात्र नेताओं की कुछ पूर्व धारणाएं थीं लेकिन वे पक्के तौर पर नहीं जानते कि वहां जाकर ये सच साबित होंगी या नहीं। राघव ने सुना हुआ था कि अमेरिकी दोस्ताना और अनौपचारिक होते हैं और व्यावसायिक या अकादमिक रूप से भेंट को छोड़ दें तो अपना परिचय अपने पुकारने के नाम से देते हैं। अनौपचारिक का यह स्तर उन्हें जरा परेशान करता है, ''हमें अपने मेजबान माता-पिता को उनके नाम से पुकारना होगा? हिन्दी में हम सम्मान और विशेष स्तर को व्यक्त करने के लिए अलग से कुछ शब्दों का प्रयोग करते हैं। पता नहीं मुझे खुद से बड़े लोगों को उनके नाम से पुकारने की आदत पड़ेगी या नहीं। अगर में लोगों से बात करते हुए मिसेज़ या मिस्टर का इस्तेमाल करूं तो क्या वे बुरा मानेंगे?''

समृद्धि को अमेरिकी संस्कृति में व्यक्ति केंद्रिकता का विचार अच्छा लगता है, ''मुझे यह बहुत अच्छा लगता है कि अमेरिकी ज़्यादातर विषयों पर अपने विचार रखने को तैयार हैं। मुझे लगता है कि छात्रों का मुखर होना और अपने विचार व्यक्त करने में संकोच महसूस न करना, सीखने के लिए एक अच्छा वातावरण बनाएगा।''

अपने-अपने विश्वविद्यालयों में अध्ययन में जुटे ये छात्र चर्चाओं में भाग लेते हैं, उन्हें ग्रुप प्रजेंटेशन्स में हिस्सा लेना होता है। और हां, संसारभर के तमाम छात्रों की तरह उन्हें पढ़ना और व्याख्यानों में मौजूद रहना भी होता है। पाठ्यक्रम और कक्षा में होने वाली

ज़्यादा जानकारी के लिए:

शैक्षिक एवं सांस्कृतिक मामलों का ब्यूरो
http://exchanges.state.gov/

हंट्सविल में द यूनिवर्सिटी ऑफ़ अलाबामा
http://www.uah.edu/

ग्रीन रिवर कम्युनिटी कॉलेज
http://www.greenriver.edu/

साभार: राघव भट्ट

साभार: जहरा अलीम

बिल्कुल ऊपर: राघव भट्ट (पिछली पंक्ति बाएं से), रिज़वान जावेद शेख और शुभदा चौधरी वाशिंगटन स्टेट के हरिकेन रिज़ के सामने कार्यक्रम में शामिल होने वाले अन्य भागीदारों के साथ।

ऊपर बाएं से: समृद्धि शुक्ला, नवेद इकबाल, जसमीत खुराना और ईशा अलीम हंटसविल, अलाबामा में एक सिनागोग में।

गतिविधियां, लोकतंत्र के सिद्धान्तों और व्यक्ति के अधिकारों, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, अनेकवाद और सहिष्णुता, और स्वैच्छिक सेवा जैसे मूलभूत अमेरिकी मूल्यों की पड़ताल में छात्रों की सहायता करती हैं।

पांच बरस पहले इस कार्यक्रम में भाग ले चुकी हीबा अलीम अंग्रेजी साहित्य में पीएच.डी. कर रही हैं और शिक्षा के क्षेत्र में जाने का इरादा रखती हैं। वह अमेरिकी कक्षा की अनौपचारिक, चर्चा-आधारित पद्धति से बहुत प्रभावित हैं। ''मुझे अच्छा लगा कि अध्यापक छात्रों की बात सुनते हैं। हमें अपने विचार व्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता था और अगर हम अध्यापक से सहमत न हों तो भी किसी को कोई दिक्कत नहीं होती थी। इसका परिणाम यह था कि हम अध्यापकों से बिना संकोच के बात कर पाते थे, चर्चाएं गहन-गंभीर होती थीं और मुझे लगता था कि मैं अपनी शिक्षा की दिशा तय कर सकती हूं।''

राशि मेहरा अमेरिकी शिक्षा में स्वैच्छिक सेवा पर जोर दिए जाने से प्रभावित दिखीं और उन्होंने पाया कि अमेरिकी क्लासरूम भारत के मुकाबले ज़्यादा मुश्किल है, ''स्वयंसेवा अमेरिकी युवाओं की शिक्षा का अनिवार्य अंग है और मुझे लगता है कि यह ज़बर्दस्त है। मुझे लगता है कि स्वैच्छिक सेवा निजी विकास के लिए बहुत महत्वपूर्ण है और एक बेहतर, स्वच्छ और स्वस्थ समाज की रचना करती है।'' राशि खुद भी स्वेच्छा नाम के एक ऐसे गैर-सरकारी संगठन के साथ काम करती हैं जिसका लक्ष्य नई दिल्ली की बढ़ती जा रही पर्यावरणीय समस्याओं की ओर ध्यान खींचना है।

राशि ने युवा छात्र नेताओं को अपने अनुभव बताए, ''हमने अपने अध्यापकों को यू ट्यूब पर बॉलीवुड के गाने दिखाए-सुनाए, उनको ये बहुत अच्छे लगे। हमने उनकी क्रिकेट में दिलचस्पी जगा दी। हम लोग क्रिकेट की इतनी बातें करते थे कि उन्होंने कहा कि वे हमारे साथ क्रिकेट मैच खेलना चाहते हैं। बहुत आनंद आया। हमारे आने के बाद ग्रीन रिवर कम्यूनिटी कॉलेज में क्रिकेट टीम बनी। हमने अपनी छाप वहां छोड़ी है।''

समृद्धि पिछले बरस भी एक एक्सचेंज प्रोग्राम में गई थीं। वह कहती हैं कि आप अपनी छाप छोड़ते हैं और साथ ही आप पर भी छाप छूटती है। अपने मेजबान परिवार के साथ रहते उन्हें एक ऐसी जीवनशैली को पास से देखने का अवसर मिला जो उनकी अपनी जीवनशैली से एकदम अलग था। कभी-कभी मैं सोचती थी कि किन लोगों के बीच आ पड़ी में? लेकिन फिर मैंने देखा कि वे अच्छे लोग थे। अब वे मेरे घनिष्ठ मित्र हैं। आप जो जानते हैं सिर्फ उसी से संतुष्ट नहीं रह सकते। आपको खुद को, अपने विचारों को, चुनौती देनी होगी, प्रयास करना होगा।''

***कैटलिन फेन्नर्टी** अन्नापॉलिस, मैरीलैंड के सेंट जॉन्स कॉलेज की छात्रा हैं। यह लेख उन्होंने नई दिल्ली स्थित अमेरिकी दूतावास में इंटर्न के तौर पर काम करते हुए लिखा था।*